शिक्षा संवाद
2023, 10 (2): 33-50
ISSN: 2348-5558
©2023, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

आलेख

भारतीय ऐतिहासिक फीचर फिल्में और इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के बीच अंतर्संबंध

मधुबाला रानी
शोधार्थी
केंद्रीय शिक्षा संस्थान
शिक्षा विभाग,दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

ऐतिहासिक फिल्में अतीत को दर्शकों से जोड़ने का एक प्रभावी माध्यम हैं। हालांकि, इनमें अक्सर ऐतिहासिक सटीकता से भटकाव होता है, जहां मनोरंजन और तथ्यात्मक कथानक को मिलाया जाता है। यह शोध ऐतिहासिक फिल्मों और पाठ्यपुस्तकों के बीच के अंतर को जांचता है, विशेष रूप से मोहनजोदड़ो (2016), अशोक (2001), पद्मावत (2018), जोधा अकबर (2008), गांधी (1982), और लगान (2001) जैसी फिल्मों में ऐतिहासिक घटनाओं, व्यक्तियों और संस्कृतियों के चित्रण पर ध्यान केंद्रित करता है।इस अध्ययन में इन फिल्मों में ऐतिहासिक विकृतियों का विश्लेषण किया गया है और उनके सामाजिक धारणा और सामूहिक स्मृति पर प्रभाव को उजागर किया गया है। उदाहरण के लिए, पद्मावत रानी पद्मिनी को काल्पनिक रूप में प्रस्तुत करती है, जबकि जोधा अकबर जोधा बाई की पहचान को गलत तरीके से दिखाती है। मोहनजोदड़ो और अशोक जैसी फिल्मों में नाटकीय तत्व ऐतिहासिक प्रामाणिकता को प्रभावित करते हैं। अध्ययन शिक्षकों को इन फिल्मों का उपयोग सहायक उपकरण के रूप में करने और ऐतिहासिक सटीकता, पूर्वाग्रहों और तथ्य एवं कल्पना के बीच के अंतर पर चर्चा को बढ़ावा देने का सुझाव देता है।

कूट शब्द :ऐतिहासिक फिल्में, इतिहास शिक्षा, ऐतिहासिक सटीकता, पाठ्यपुस्तकें, सामाजिक धारणा, आलोचनात्मक सोच।

इतिहास का विषय केवल तिथियां और तथ्यों का संग्रह नहीं है, बल्कि एक कथा है जो शिक्षा में इतिहास की भूमिका को मानव व्यवहार और सामाजिक विकास की जटिलताओं को समझने में मदद करती हैं।उदाहरण के लिए इ. एच. कार ने कहा है कि

“इतिहास में प्रमाणित तथ्यों का एक संग्रह होता है। इतिहासकार को यह तथ्य दस्तावेजों और शिलालेखों आदि में उपलब्ध होते हैं। जैसे मछली विक्रेता के स्लैब में मछली। इतिहासकार उन्हें इकट्ठा करता है,उन्हें घर ले जाता है और उन्हें अपनी पसंद के अनुसार पकाता,पहुंचता है”। घटनाओं के कारण और परिणाम का विश्लेषण करके इतिहासकार उन पैटर्न और रुझानों की पहचान कर सकते हैं जो मानव व्यवहार और सामाजिक परिवर्तनों के बारे में स्पष्टीकरण और भविष्यवाणियां प्रदान करते हैं। इतिहास जानने के लिए बहुत सारे स्रोत हैं,जैसे प्राथमिक स्रोत और द्वितीयक स्रोत। ऐतिहासिक फिल्में भी एक द्वितीय स्रोत का हिस्सा है। स्कूल में इतिहास का अध्ययन करने का उद्देश्य तारीखों और तथ्यों को याद रखने से कहीं आगे तक फैला हुआ है। स्कूल में इतिहास का अध्ययन करने का उद्देश्य बहुआयामी है। केवल अतीत के बारे में ज्ञान प्रदान करना ही नहीं बल्कि आवश्यक कौशल विकसित करना और वर्तमान और भविष्य की गहरी समझ को बढ़ावा देना भी है। सबसे महत्वपूर्ण, इतिहास की शिक्षा सामान्य रूप से और विशेष रूप से ऐतिहासिक विशेषताओं के बारे में आलोचनात्मक सोच और कौशल विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है। जब छात्र इतिहास का अध्ययन करते हैं तो वह साक्ष्य के विभिन्न स्रोतों का मूल्यांकन करना सिखाते हैं।

प्राथमिक स्रोतों जैसे- मूल दस्तावेज, कलाकृतियां और द्वितीय स्रोत में जैसे विभिन्न व्याख्याओं के बीच अंतर करते हैं। इस प्रक्रिया में इन स्रोतों की विश्वसनीयता की जांच करना, पूर्वाग्रहों को पहचानना और उसके संदर्भ को समझाना शामिल है जिसमें उन्हें बनाया गया था। इस तरह के कठोर विश्लेषण से छात्रों को अच्छी तरह से तर्कपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में मदद मिलती है। तर्क वितर्क एक ऐसा कौशल है जो न केवल क्षेत्र परिस्थितियों में बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में भी अमूल्य है। ऐतिहासिक फिल्म अतीत की घटनाओं का एक सिनेमाई प्रतिनिधित्व है जो कलात्मक कहानी कहने के साथ तथ्यात्मक सटीकता को जोड़ती है। यह फिल्में इतिहास को सुलभ और आकर्षक बनाने की अपनी क्षमता के लिए मूल्यवान है जो अतीत से भावनात्मक और दृश्य संबंध प्रदान करती

हैं। ऐतिहासिक सटिका से संबंधित उनका सार्वजनिक धारणा और शिक्षा पर प्रभाव महत्वपूर्ण है इतिहास की फिल्में न केवल मनोरंजन करती हैं बल्कि जानकारी और प्रेरणा भी देती हैं। जिससे हमारी दुनिया को आकार देने वाले मानवीय अनुभव की गहरी समझ विकसित होती है।अपने शक्तिशाली अभियानों के माध्यम से वे ऐतिहासिक यादों को संरक्षित और लोकप्रिय बनाते हैं,यह सुनिश्चित करते हुए कि अतीत के सबक और विरासत वर्तमान में गूंजता रहे।इतिहास पर आधारित फिल्मों का प्रभाव सिनेमा से कहीं आगे तक फैला है। वह अक्सर लोगों की धारणाओं और समूह सामूहिक स्मृति को प्रभावित करते हैं जिस ऐतिहासिक घटनाओं और व्यक्तियों को याद रखना और समझने का तरीका तय होता है। लोकप्रिय इतिहास की फिल्म में ऐतिहासिक विषयों के प्रति रुचि जग सकती हैं जिससे दर्शक पुस्तक को, चित्रों या संग्रहालय में जाकर अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित होते हैं। ऐतिहासिक फिल्म शिक्षा में भी भूमिका निभाते हैं।

कई शिक्षक छात्रों को इतिहास से जोड़ने और ऐतिहासिक पाठ को दृश्य संदर्भ प्रदान करने के लिए पूरक सामग्री के रूप में फिल्मों का उपयोग करते हैं। इतिहासकार यह भी मानते हैं की फिल्में व्यापक दशकों तक पहुंच कर इतिहास को लोकतांत्रिक बनाने में मदद करती हैं।जबकि अकादमिक इतिहास अक्सर विद्वानों के समूह तक ही सीमित रहता है।फिल्में ऐतिहासिक ज्ञान को आम जनता तक पहुंचा सकते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सुलभता बहुत जरूरी है जहां इतिहास की शिक्षा राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक समाज को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। हालांकि इतिहासकार ऐतिहासिक फिल्मों की संभावित कमियों के बारे में भी आगाह करते हैं। वह आलोचनात्मक रूप से देखने के महत्व पर जोर देते हैं क्योंकि फिल्में अक्सर नाटक के प्रभाव के लिए तथ्य और कल्पना को मिला देती हैं।फिल्में कभी-कभी ऐतिहासिक अशुद्धियों को बनाए रख सकती हैं या पक्षपात पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत कर सकती हैं। इसलिए यह जरूरी है कि शिक्षक फिल्मों का आलोचनात्मक रूप से विश्लेषण करने में छात्रों का

मार्गदर्शन करें, कलात्मक स्वतंत्रता और ऐतिहासिक साक्षी के बीच अंतर करें। यह आलोचनात्मक जुड़ाव छात्रों की मीडिया साक्षरता और एतिहासिक समझ को बढ़ा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र और उसकी समझ

विभिन्न साहित्य लिखो और शोध अध्ययनों की समीक्षा करने पर यह निष्कर्ष निकला है की कुछ ही शोधकर्ताओं ने ऐतिहासिक फिल्म और अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों के बीच संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया है।कुछ शोधकर्ताओं ने यह भी संकेत दिया कि पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों की तुलना में ऐतिहासिक फिल्मों के शैक्षिक प्रभाव पर शोध की कमी है। विशेष रूप से इस बारे में की यह विभिन्न मध्यम छात्रों की समझ और ऐतिहासिक ज्ञान को बनाए रखने को कैसे प्रभावित करते हैं। फिल्मों में ऐतिहासिक आख्यानों की सटीकता और प्रामाणिकता और पाठ्य पुस्तकों के विवरणों के साथ उनका संश्लेषण उपकरण के रूप में उनकी वैधता का आकलन करने के लिए भविष्य में आगे की जांच की आवश्यकता है। “सिनेमैटिक रिप्रेजेंटेशन एंड हिस्टॉरिकल अंडरस्टैंडिंग”(2019) पर किए गए एक अन्य आख्यान में कुमार ने स्वीकार किया की फिल्में ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकती हैं, लेकिन उनमें इतिहास के विकृत या काल्पनिक संस्करण प्रस्तुत करने का जोखिम भी होता है। समीक्षा से यह बात सामने आती है कि इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में ऐतिहासिक फिल्मों के आलोचनात्मक विश्लेषण पर कम शोध किया गया है। शोधकर्ता ने अपनी परियोजना के लिए भारत में इतिहास के पाठ्यपुस्तक और सिनेमा इतिहास के बीच के हस्तक्षेप का पता लगाने का विकल्प चुना क्योंकि शोधकर्ता मीडिया शिक्षा और सामूहिक समिति के बीच गतिशील संबंधों से वंचित थे। पाठ्य पुस्तकें और सिनेमा दोनों ही इस बात को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कि हम इतिहास को कैसे देखते हैं और समझते हैं। फिर भी

वह अक्सर अलग-अलग कथाएं और व्याख्याएं प्रस्तुत करते हैं। इन दो माध्यमों के बीच अंतर संबंधों और संघर्षों की जांच करके शोधकर्ता का लक्ष्य ऐतिहासिक प्रतिनिधित्व की जटिलताओं और सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों के प्रभाव को उजागर करना है।

अध्ययन का औचित्य

हाल के दिनों में ऐतिहासिकता के नाम पर बहुत सी फिल्मों के प्रसार के साथ वास्तविक तथ्यों और विकृत तथ्यों के बीच अंतर करना बहुत मुश्किल है। फिल्म की करिश्माई की क्षमता काफी हद तक उनकी दृश्य प्रभाव के कारण होती है। लोग फिल्मों के संदेश और कथाओं को अपेक्षाकृत आसान तरीके से समझते हैं। विनम्र यह है कि लोग शायद ही कभी फिल्म की काल्पनिक विशेषताओं को अपने दिमाग में रखने की जहां मत उठाते हैं। और वह अक्सर यह मानने लगते हैं की फिल्में विशेष ऐतिहासिक घटनाओं के तथ्यों का तथ्यात्मक रूप से सही चित्रण है। यह विडंबना इस तथ्य से और बढ़ जाती है कि बुजुर्ग लोगों और स्कूल जाने वाले छात्रों के बीच स्कूल की पाठ्य पुस्तकों और अन्य ऐतिहासिक साहित्य की उपयोगिता को कम करने की स्पष्ट प्रवृत्ति है। इस स्थिति ने शोधकर्ता को ऐतिहासिक फिल्मों और इतिहास की पाठ्यपुस्तक के बीच अंतर संबंध के बारे में यह शोध करने के लिए प्रेरित किया।

शोध प्रश्न

- फिल्म के ऐतिहासिक वर्णन की तुलना पाठ्यपुस्तकों और अन्य ऐतिहासिक साहित्य में दिए गए तथ्यों से करना किस हद तक संभव है?
- इन फिल्मों में प्रमुख ऐतिहासिक अशुद्धियां क्या है?
- कथानक और चरित्र विकास में ऐतिहासिक तथ्यों को किस प्रकार बढ़ाते या बिगड़ते हैं?

- समकालीन परिप्रेक्ष्य और मुद्दे किस प्रकार इन फिल्मों में इतिहास के चित्रण को आकार देते हैं?

शोध उद्देश्य

- ऐतिहासिक फिल्मों में ऐतिहासिक तथ्यों के चित्रण की सटीकता और प्रमाणिकता का आकलन करना।
- ऐतिहासिक फिल्मों और ऐतिहासिक स्रोतों में पारस्पर विरोधी ऐतिहासिक कथाओं का मूल्यांकन करना।
- फिल्म, पाठ्य पुस्तक और ऐतिहासिक साहित्य में ऐतिहासिक चरित्र के चित्रण की तुलना करना इसके साथ ही फिल्म के कथानक और चरित्र को विकसित करने में फिल्म में प्रयुक्त अभियानों की योगदान की जांच करना।
- समकालीन संदर्भों के प्रभाव की जांच करना जो फिल्म निर्माता की पसंद और दर्शकों की व्याख्या को आकार देते हैं।

शोध विधि

गुणात्मक शोध के भीतर ऐतिहासिक और काठात्मक पद्धतियों का संयोजन इस शोध प्रबंध विषय के लिए विशेष रूप से उपयुक्त ऐतिहासिक पद्धति फिल्मों की सटीकता और प्रमाणिकता को समझने के लिए आवश्यक तथ्य और प्रासंगिक आधार प्रदान करती हैं इस बीच कथा आत्मक पलटी कहानी कहने की तकनीक और सिणमई उपकरणों में अंतर दृष्टि प्रदान करती है जो दर्शकों के ऐतिहासिक घटनाओं के साथ जुड़ाव और व्याख्या को आकर देती है साथ में यह पद्धतियां एक व्यापक विश्लेषण की अनुमति देता है जो ऐतिहासिक फिल्मों में निहित तथ्यात्मक अखंडता और कलात्मक अभिव्यक्ति दोनों का सम्मान करती हैं यह दोहरा डिस्टिक कोर्ट एक सूक्ष्म आलोचना को सक्षम करता है जो

ऐतिहासिक वास्तविकता और सिनेमाई प्रतिनिधित्व के बीच परस्पर क्रिया को उजागर करता है अतः इस बात की समझ को सम्मिलित करता है की फिल्में सार्वजनिक इतिहास और सांस्कृतिक समिति में कैसे योगदान देती हैं

प्रतिदर्श

इस शोध में छ: ऐतिहासिक फिल्मों का चयन किया गया। जो भारतीय इतिहास की तीन अलग-अलग समयावधि का प्रतिनिधित्व करती हैं। जैसे-प्राचीन काल, मध्यकाल और भारत का आधुनिक काल। इसे नीचे तालिका में दर्शाया गया है-

तालिका-1 समयावधि और फिल्म चयन

समयवधि	फिल्में
प्राचीन काल	मोहनजो डरो, (2016)
	अशोक ,(2001)
मध्यकाल	जोधा अकबर,(2008)
	पद्मावत ,(2018)
आधुनिक काल	गांधी, (1986)
	लगन,(2001)

परिसीमन

ऐतिहासिक फिल्म और इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के बीच अंतर्संबंध अध्ययन समिक्षा निम्नलिखित है।

- यह शोध केवल भारतीय संदर्भ तक ही सीमित है जिसमें भारतीय इतिहास को दर्शाने वाली फिल्मों और पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण किया गया है।
- यह शोध विशेष रूप से विशिष्ट ऐतिहासिक फिल्मों पर केंद्रित है। जैसे-द्मावत,मोहनजोदड़ो,जोधा अकबर, अशोक गांधी ,लगन का तुलनात्मक अध्यन भारतीय स्कूलों की एनसीईआरटी इतिहास की पुस्तकों का उपयोग करके की गई है।

- (विश्लेषित फिल्में 1982 और 2018 के बीच निर्मित की गई थी।

व्याख्या और विश्लेषण

आशुतोष गोवारिकर द्वारा निर्देशित "मोहेंजो दारो”" एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। जो दुनिया के सबसे प्राचीन शहरी केंद्रों में से एक को जीवन में लाती है। यह फिल्म 2600-1900 ईसा पूर्व के आसपास के समय को दर्शाया है। यह सर्मन नामक एक युवा किसान की यात्रा को अनुसरण करती है, जो मोहनजोदड़ो के भव्य शहर में प्रवेश करता है। फिल्म ऐतिहासिक तथ्यों को काल्पनिकता के साथ जोड़ती है, जो मनोरंजन के लिए तो ठीक है, लेकिन इतिहासकारों के बीच इस फिल्म के ऐतिहासिक चित्रण पर सवाल उठाए गए हैं।

मोहनजोदड़ो, जो वर्तमान पाकिस्तान में स्थित है, प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता का एक प्रमुख शहर था। यह अपनी उन्नत शहरी योजना, प्रभावशाली वास्तुकला, और उन्नत जल प्रबंधन प्रणालियों के लिए प्रसिद्ध था, और यह सभ्यता सैकड़ों वर्षों तक फलती-फूलती रही, लेकिन अचानक इसके पतन का कोई स्पष्ट कारण नहीं मिला। पुरातात्विक खुदाई से जीवनशैली के बारे में बहुत कुछ पता चला है, लेकिन कई पहलुओं पर अब भी रहस्य बना हुआ है, खासकर क्योंकि उनकी लिपि को अब तक समझा नहीं जा सका है।

फिल्म में हड़प्पा सभ्यता के कपड़ों को चित्रित किया गया है, जिसमें पुरुषों ने साधारण लंगोटी पहनी थी, जबकि महिलाएं सूती या ऊनी स्कर्ट पहनती थीं। यह चित्रण एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों में उल्लिखित पुरातात्विक तथ्यों से मेल नहीं खाता, जहां बताया गया है कि हड़प्पा लोग सामान्य और व्यावहारिक कपड़े पहनते थे। फिल्म में हड़प्पा लोगों को आधुनिक फैशन के अनुसार तैयार किया गया है, जो ऐतिहासिक साक्ष्यों से मेल नहीं खाता है।

एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों में हड़प्पा आभूषणों का भी विस्तार से उल्लेख है, जैसे हार, चूड़ियां, बालियां, और मोती, जो सोने, चांदी, तांबे और सेमी-कीमती पत्थरों से बने होते थे। हालांकि, फिल्म में इन आभूषणों का आकार और डिजाइन अतिरंजित किया गया है, जो ऐतिहासिक वास्तविकता से मेल नहीं खाता है।

फिल्म में कृषि के महत्व को बहुत कम चित्रित किया गया है, जबकि एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों में हड़प्पा सभ्यता की कृषि प्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। फिल्म में खेती के कार्यों को केवल कुछ दृश्यों में दिखाया गया है, जो ऐतिहासिक तथ्यों से मेल नहीं खाते।

2001 की फिल्म "अशोक", जिसे संतोष शिवन ने निर्देशित किया है, सम्राट अशोक के जीवन को दर्शाती है, जो भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं और जो एक क्रूर विजेता से बौद्ध धर्म के अनुयायी में बदल गए। फिल्म में अशोक के शासन की प्रमुख घटनाओं को संक्षेप में दिखाया गया है, जैसे कि कलिंग युद्ध और उनके बौद्ध धर्म को अपनाने की प्रक्रिया।फिल्म में काल्पनिक तत्वों को जोड़ा गया है, जैसे कि कौरवकी नामक एक पात्र, जिसे एक प्रेमिका के रूप में दिखाया गया है, जो अशोक के नैतिक जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालांकि, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह एक प्रमुख अशुद्धता है, क्योंकि कौरवकी का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।फिल्म में अशोक के जीवन को सरल किया गया है, और कई महत्वपूर्ण घटनाओं को संक्षेपित किया गया है, जिनमें अशोक का बौद्ध धर्म को अपनाने का कारण केवल कलिंग युद्ध से उत्पन्न हुआ आघात दिखाया गया है। ऐतिहासिक दस्तावेज़ों के अनुसार, यह परिवर्तन एक लंबी और विचारशील प्रक्रिया थी, जो वर्षों की आत्मचिंतन और नैतिक विचार से प्रेरित थी।

"पद्मावत" की समझ के लिए, हमें उसके कवि मलिक मुहम्मद जायसी के संदर्भ को देखना होगा। जायसी का काम ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि यह एक रूपक के रूप में काम करता है, जो मानव आत्मा और भगवान के बीच के संबंध को दर्शाता है। जायसी का "पद्मावत" एक काव्य रचना है, जो ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित नहीं है, बल्कि एक साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से लिखा गया है। इतिहासकारों के अनुसार, 14वीं सदी के ऐतिहासिक दस्तावेज़ों में रानी पद्मिनी का कोई उल्लेख नहीं है, और यह कहानी लगभग 250 वर्षों बाद जायसी की काव्य रचना में उत्पन्न हुई थी। "पद्मावत" को एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में प्रस्तुत करना गलत है, क्योंकि यह एक काव्य रचना है और इसका उद्देश्य सांस्कृतिक संदेश देना था।

"जोधा अकबर" एक 2008 की भारतीय ऐतिहासिक रोमांटिक फिल्म है। जिसे आशुतोष गोवारिकर ने निर्देशित किया है। फिल्म में अकबर और जोधा बाई के विवाह को दिखाया गया है, लेकिन यह फिल्म ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कई मामलों में गलत है। फिल्म में जोधा बाई को अकबर की पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार, जोधा बाई दरअसल अकबर के बेटे जहांगीर की पत्नी थीं। फिल्म में अकबर और जोधा बाई के रिश्ते को अधिक व्यक्तिगत और रोमांटिक रूप में दिखाया गया है, जबकि एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों में अकबर की राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंधों की राजनीतिक रणनीति पर जोर दिया गया है।

"गांधी" (1982) एक जीवित जीवनी पर आधारित फिल्म है, जिसमें महात्मा गांधी के जीवन को दिखाया गया है। फिल्म में गांधी के जीवन के प्रमुख घटनाओं जैसे दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव का सामना करना और भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष करना दिखाया गया है।फिल्म में जनरल रेजिनाल्ड डायर को एक निर्दयी व्यक्ति के

रूप में दिखाया गया है, जबकि एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों में डायरर के कार्यों का विस्तृत वर्णन है, जिसमें उनके कृत्यों के राजनीतिक संदर्भ को समझाया गया है।"लगान" (2001) एक ऐतिहासिक खेल-नाटक फिल्म है। जिसमें भारतीय गांवों के एक समूह द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ क्रिकेट मैच खेला जाता है। यह फिल्म भारतीयों और ब्रिटिशों के बीच औपनिवेशिक संघर्ष को दिखाती है, लेकिन इसमें औपनिवेशिक शोषण की जटिलताओं को सरल बनाया गया है।

फिल्म में दिखाया गया है कि ब्रिटिशों ने भारतीयों को शोषित किया, लेकिन एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों में यह भी बताया गया है कि स्थानीय अभिजात वर्ग और जमींदारों ने भी ब्रिटिशों के साथ मिलकर भारतीयों का शोषण किया था। फिल्म का यह पहलू औपनिवेशिक वास्तविकताओं को अधिक सरल तरीके से पेश करता है।जैसा कि हम जानते हैं कि फ़िल्में मुख्य रूप से मनोरंजन के उद्देश्य से बनाई जाती हैं, लेकिन जब हम ऐतिहासिक फ़िल्मों की बात करते हैं, तो ये फ़िल्में केवल मनोरंजन या पैसा कमाने के लिए नहीं बनाई जातीं। ऐतिहासिक फ़िल्में कुछ तथ्यात्मक घटनाओं से गहराई से जुड़ी होती हैं। जो अतीत में घटी थीं और फिल्म निर्माता की ज़िम्मेदारी होती है कि वह इन तथ्यों को ऐतिहासिक सटीकता के साथ पर्दे पर प्रस्तुत करें।

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य ऐतिहासिक फ़िल्मों और ऐतिहासिक ग्रंथों के बीच मौजूद अंतर को समझना था। ऐतिहासिक फ़िल्मों और इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के बीच का यह अंतर यह दिखाता है कि कैसे इतिहास को लोकप्रिय संस्कृति और शैक्षणिक विमर्श में अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत और समझा जाता है।ऐतिहासिक फ़िल्में जैसे "पद्मावत," "मोहेंजो दारो," "जोधा अकबर," "अशोक," "गांधी," और "लगान" दर्शकों को ऐतिहासिक कथाओं से जोड़ने का एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। ये फ़िल्में, जबकि मनोरंजक और दृश्य रूप से आकर्षक हैं, अक्सर रचनात्मक स्वतंत्रताओं का सहारा लेती हैं,

जिससे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक गलतियाँ और जटिल घटनाओं और पात्रों का सरलीकरण होता है।उदाहरण के लिए, "पद्मावत" और "जोधा अकबर" जैसी फ़िल्में ऐतिहासिक रिकॉर्ड से हटकर उन पात्रों और घटनाओं को प्रस्तुत करती हैं, जिन्हें विश्वसनीय ऐतिहासिक स्रोतों द्वारा प्रमाणित नहीं किया गया है। "पद्मावत" को रानी पद्मिनी को एक ऐतिहासिक चरित्र के रूप में प्रस्तुत करने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा है। जबकि अधिकांश इतिहासकार उन्हें काल्पनिक मानते हैं। इसी तरह, "जोधा अकबर" में जोधा बाई को अकबर की पत्नी के रूप में दिखाया गया है, जबकि इतिहासकार उन्हें जहांगीर की पत्नी मानते हैं।

इसके अतिरिक्त, "मोहेंजो दारो"और "अशोक" जैसी फ़िल्में प्राचीन इतिहास को चित्रित करने में आने वाली चुनौतियों को दिखाती हैं। सीमित पुरातात्विक साक्ष्य और नाटकीय कहानी कहने की आवश्यकता के कारण ये फ़िल्में स्थापित ऐतिहासिक तथ्यों से अक्सर भटक जाती हैं।ऐतिहासिक फ़िल्में "गांधी" और "लगान" इस बात का उदाहरण देती हैं कि कैसे फ़िल्में ऐतिहासिक समझ को उजागर कर सकती हैं और उसे विकृत भी कर सकती हैं। जबकि "गांधी" महात्मा गांधी के स्वतंत्रता संग्राम की अहिंसात्मक लड़ाई की भावना को पकड़ती है, यह स्वतंत्रता आंदोलन की जटिल राजनीतिक गतिशीलता और अन्य नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिकाओं को नजरअंदाज करती है। दूसरी ओर, "लगान" औपनिवेशिक उत्पीड़न को क्रिकेट मैच के माध्यम से नाटकीय रूप में प्रस्तुत करती है, जिससे व्यापक सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ को सरल बना दिया गया है और उपनिवेशवाद के ढांचे में स्थानीय अभिजात वर्ग की मिलीभगत को अनदेखा कर दिया गया है। इन फ़िल्मों की समीक्षा एनसीईआरटी इतिहास की पाठ्यपुस्तकों की पृष्ठभूमि में करने पर ऐतिहासिक घटनाओं के चित्रण में एक बड़ा अंतर स्पष्ट होता है। पाठ्यपुस्तकें संतुलित और साक्ष्य-आधारित ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, जो अक्सर सिनेमाई रूपांतरण में खो जाने वाली जटिलताओं और बारीकियों पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

यह शोध ऐतिहासिक फ़िल्मों के साथ आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने के महत्व पर जोर देता है। यह फ़िल्मों को इतिहास को लोकप्रिय बनाने के उपकरण के रूप में उपयोग करने और दर्शकों को ऐतिहासिक अध्ययन में गहराई से जानने और मनोरंजन व तथ्यात्मक इतिहास के बीच अंतर करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल देता है।इस अध्ययन के आधार पर, शोधकर्ताओं का तर्क है कि फ़िल्मों में ऐतिहासिक तथ्यों की अशुद्धता का सामाजिक धारणा पर गहरा और बहुआयामी प्रभाव पड़ता है, जो अक्सर सामूहिक स्मृति और जनता की ऐतिहासिक घटनाओं, पात्रों और कालखंडों के प्रति समझ को आकार देती है।

ऐतिहासिक फ़िल्मों का व्यापक पहुंच और भावनात्मक अपील के कारण दर्शकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिससे ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों के प्रति लोगों की धारणा प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, "पद्मावत" और "जोधा अकबर" जैसी फ़िल्में ऐतिहासिक कथाओं को काल्पनिक और रूमानी रूप देने के कारण व्यापक भ्रांतियों को जन्म देती हैं। रानी पद्मिनी और जोधा बाई को केंद्रीय ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के रूप में चित्रित करना, जबकि उनके बारे में कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है, इन पात्रों को जनता के बीच तथ्यों के रूप में स्थापित करता है, जिससे इतिहास को लोकप्रिय स्मृति में फिर से लिखा जाता है।

इन अशुद्धियों के कारण रूढ़ियों और पूर्वाग्रहपूर्ण कथाओं को भी बल मिलता है। उदाहरण के लिए, "पद्मावत" में अलाउद्दीन खिलजी को एक बर्बर आक्रमणकारी के रूप में चित्रित करना जटिल ऐतिहासिक व्यक्तित्वों और उनकी प्रेरणाओं के प्रति एक सरल दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। इसी प्रकार, "जोधा अकबर" अकबर और जोधा बाई के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध प्रस्तुत करता है, जो मुगल-राजपूत संबंधों की जटिल और अक्सर विवादास्पद प्रकृति को कम कर देता है।ऐतिहासिक अशुद्धियां इस बात को भी प्रभावित

करती हैं कि ऐतिहासिक घटनाओं को कैसे संदर्भित किया जाता है। "मोहेंजो दारो" और "अशोक" जैसी फ़िल्में प्राचीन सभ्यताओं और शासकों के समृद्ध और जटिल इतिहास को सरल बना देती हैं, जिससे उनके योगदान और विरासत को एक ऐसी कहानी में बदल दिया जाता है जो केवल सिनेमा के लिए उपयुक्त हो।

"लगान" और "गांधी" जैसी फ़िल्मों में औपनिवेशिक इतिहास के चित्रण का भी समकालीन समझ पर प्रभाव पड़ता है। "लगान" में केवल ब्रिटिश अधिकारियों के अत्याचारों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जबकि स्थानीय सहयोगियों की भूमिका की अनदेखी की गई है। यह फ़िल्म उपनिवेशवाद के शोषण को एक हल्के ढंग से प्रस्तुत करती है, और महत्वपूर्ण मुद्दों पर कम ध्यान देती है। यह औपनिवेशिक इतिहास के बारे में एक सीमित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें स्थानीय सत्ता प्रणालियों और प्रतिरोध के आंतरिक जटिलताओं को अनदेखा किया गया है।

इसके विपरीत, "गांधी" जैसी फ़िल्म, हालांकि इसमें ऐतिहासिक अशुद्धियां हैं, महत्वपूर्ण मूल्यों को उजागर करने और आंदोलनों को प्रेरित करने में सकारात्मक भूमिका निभा सकती है। गांधी की फ़िल्म उनके अहिंसा और सविनय अवज्ञा के दर्शन को उजागर करती है, जो युवा पीढ़ियों और अन्य लोगों को प्रेरित कर सकती है। हालांकि, यहां भी ऐतिहासिक घटनाओं और अन्य प्रमुख व्यक्तियों के योगदान का सरलीकरण देखा जा सकता है, जिससे समाज और राजनीतिक संघर्षों की जटिल वास्तविकताओं की अनदेखी होती है।

ऐतिहासिक अशुद्धियों का प्रभाव केवल व्यक्तिगत भ्रांतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक सामाजिक प्रभाव भी होता है। ये राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक स्मृति, और ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं के प्रति सामूहिक दृष्टिकोण को आकार दे सकती हैं।इतिहासकारों और शिक्षकों की एक प्रमुख भूमिका होती है कि वे इन अशुद्धियों को संबोधित करें और फ़िल्मों में प्रस्तुत सरल कथाओं को चुनौती देने के लिए गहन और

साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण प्रदान करें।शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ऐतिहासिक फ़िल्मों में तथ्यात्मक अशुद्धियां समाज पर गंभीर प्रभाव डालती हैं। ये फ़िल्में ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं को रोमांटिक और काल्पनिक रूप में पेश करके व्यापक स्तर पर गलत धारणाएं उत्पन्न करती हैं। "पद्मावत" और "जोधा अकबर" जैसी फ़िल्मों में, जिन पात्रों का ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, उन्हें प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह न केवल ऐतिहासिक सटीकता को प्रभावित करता है, बल्कि सामूहिक स्मृति को भी विकृत करता है।

इतिहास को गलत ढंग से प्रस्तुत करने से सांस्कृतिक और धार्मिक पूर्वाग्रहों को बढ़ावा मिलता है। उदाहरण के लिए, "पद्मावत" में अलाउद्दीन खिलजी को एक बर्बर आक्रमणकारी के रूप में दिखाने से एकतरफा दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। इसी तरह, "अशोक" और "मोहेंजो दारो”" जैसी फ़िल्में प्राचीन सभ्यताओं और सम्राटों के जटिल इतिहास को सरल बनाकर प्रस्तुत करती हैं, जिससे उनकी वास्तविक विरासत का ह्रास होता है।"लगान" में औपनिवेशिक शोषण को केवल ब्रिटिश अधिकारियों के अत्याचार तक सीमित कर दिया गया है, जबकि स्थानीय अभिजात वर्ग की मिलीभगत को नजरअंदाज कर दिया गया है। इससे औपनिवेशिक इतिहास के बारे में सीमित और गलत धारणाएं बनती हैं।

शोधकर्ताओं का मानना है कि ऐतिहासिक फ़िल्मों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं होना चाहिए। फ़िल्म निर्माताओं की यह जिम्मेदारी है कि वे गहन ऐतिहासिक शोध करें और ऐतिहासिक तथ्यों को सही तरीके से प्रस्तुत करें। फ़िल्मों में दिखाए गए गलत तथ्यों और पूर्वाग्रहों से समाज में ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों के बारे में गलत समझ पैदा हो सकती है।अंततः, यह अध्ययन यह बताता है कि ऐतिहासिक फ़िल्मों का उपयोग शिक्षा के उद्देश्य से किया जा सकता है, लेकिन केवल तभी जब इन्हें ऐतिहासिक ग्रंथों और साक्ष्यों के साथ मिलाकर प्रस्तुत किया जाए। शोधकर्ता इस बात पर जोर देते हैं कि समाज को इतिहास की

जटिलताओं की सराहना करने और गलत तथ्यों की पहचान करने के लिए गहरी समझ और आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

निष्कर्ष

शोध और खोज के माध्यम से शोधकर्ता मल इस निष्कर्ष पर पहुँचा हैं कि ऐसे कई कारक हैं जो इतिहास के पाठ्य पुस्तकों के साथ ऐतिहासिक फिल्म का विशेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम कह सकते हैं की ऐतिहासिक फिल्में केवल मनोरंजन के उद्देश्य से नहीं होती है। ऐतिहासिक फिल्में अतीत में घटित कुछ तथ्यात्मक घटनाओं से जटिल रूप से जुड़ी होती हैं। दूसरी ओर फिल्म निर्माता को भी उचित ऐतिहासिक स्रोतों के साथ ऐसे तथ्यों को पर्दे पर उजागर करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ऐतिहासिक फिल्म और इतिहास के पाठ्य पुस्तकों और अन्य दस्तावेजों के बीच उपलब्ध यंत्रों को बताना था।

ऐतिहासिक फिल्मों और इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के बीच अंतर संबंध इस बात की आकर्षक खोज प्रस्तुत करता है की प्रमुख संस्कृति बनाम अकादमी चर्चा में इतिहास को कैसे दर्शाया और समझा जाता है। प्रत्येक फिल्म जीवन के प्रति एक अनूठा दृष्टिकोण देती है।जिसके माध्यम से दर्शन अथवा विद्यार्थी ऐतिहासिक कथाओं से जुड़ जाते हैं। ऐसी फिल्में आनंद लेते और कल्पना करते समय ऐतिहासिक अनूपयुक्तिता को अधिक सरलकृत दृश्य या जटिल दृश्य के साथ सामने लाती हैं। इन सभी विश्लेषण के बाद शोधकर्ता का मानना है की ऐतिहासिक फिल्मों में इतिहास को सुलभ और उत्साह वर्धन बनाने की क्षमता होती है। जबकि दूसरी ओर कुछ अशुद्धियां अतीत की सामाजिक चेतना को काफी हद तक बाधित कर सकती हैं। इन फिल्मों को आलोचनात्मक दृष्टि से देखना और इतिहास की उचित समझ सुनिश्चित करने के लिए उन्हें ऐतिहासिक अध्ययन के साथ पूरक बनाना महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के निहितार्थ

- प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने ऐतिहासिक फिल्मों और घटनाओं के माध्यम से सामाजिक धारणाओं को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाने का प्रयास किया है यह भी बताया गया कि किस प्रकार ऐतिहासिक फिल्में वास्तविक अतीत की समझ और साक्षी को विकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- अध्ययन से पता चलता है की फिल्म निर्माता ऐतिहासिक फिल्मों के माध्यम से हमारे युवा पीढ़ी और उनके विचार प्रक्रिया को आकार देने के लिए भी जिम्मेदार हैं।
- अध्ययन का निष्कर्ष यह दर्शाता है की फिल्में वास्तविक तत्व और अतीत की घटनाओं को नजर अंदाज करके समाज को एक आयामी कथाओं की और व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं।
- गहन विश्लेषण के बाद शोधकर्ता ने पाया की ऐतिहासिक फिल्में मनोरंजन और पैसा कमाने के नाम पर हमारे युवा पीढ़ी को अतीत की वास्तविक समझ से भटक रही हैं।

*****

सदंर्भ

- Batra, P. (Ed.). (2013). Social science learning in schools: Perspective and challenges. SAGE Publications.
- Carr, E. H. (1961). What is history? Penguin Books.
- Cohen, L., & Manion, L. (Year). Research Methods in Education (5th ed.). Routledge.
- Creswell, J. W. (2012). Educational research: Planning, conducting, and evaluating
- quantitative and qualitative research (4th ed.). Pearson.

- Davis, N. Z. (2001). Reel history: Historical films as a medium for historical inquiry. Historical Journal of Film, Radio and Television, 21(4), 377-389.
- de Groot, J. (2009). Engaging with history: Public perceptions through historical films. Public History Review, 16(1), 45-59.
- Dwiwedi, H. P. (1975). Jayasi and his Padmavat. Rajkamal Prakashan.
- Dwyer, R. (2006). Bollywood and history: The problematics of representing the past in Indian cinema. Film & History, 36(1).
- Dwyer, R. (2006). Filming the Gods: Religion and Indian Cinema. Routledge.
- Edison, T. (Director). (1895). The execution of Mary, Queen of Scots [Film]. Edison Manufacturing Company.
- Gray, D. E. (2013). Doing research in the real world (5th ed.). Sage Publications.
- Griffith, D. W. (Director). (1915). The Birth of a Nation [Film]. Epoch Producing Corporation.
- Guha, R. (2013). Gandhi before India. Penguin Books.
- Kumar, K. (2004). Origins of India's "Textbook Culture". Orient Longman.
- Kumar, R. (2019). Cinematic representation and historical understanding. Publisher unknown.